"वर्तमान शैक्षिक परिवेश में मानव मूल्यों की प्रासंगिकता – एक अध्ययन"

शोध– सारांशिका

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुंज, हरिद्वार
से
पी–एच0 डी0 (शिक्षाशास्त्र) की
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध निर्देशक
डॉ0 आर0 पी0 कर्मयोगी
निदेशक , स्कूल ऑफ एजूकेशन
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुंज, हरिद्वार

शोधार्थी
अतुल कुमार मिश्र
(व्याख्याता)
स्कूल ऑफ एजूकेशन
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुंज, हरिद्वार

प्रस्तावना

बच्चे विश्व की अनमोल सम्पत्ति हैं। हमारा आने वाला कल कैसा होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है? हमने उन्हें कैसा चिंतन, कैसी मानसिकता और कैसी दिशा प्रदान की है। इतिहास साक्षी है कि जिन बच्चों को प्रारंभ से ही श्रेष्ठ संस्कार और उचित दिशा प्राप्त हुई, उन्होंने आगे चलकर न केवल अपने राष्ट्र को स्वर्णिम छवि प्रदान की, अपितु काल के कपाल पर अपने अमिट हस्ताक्षर भी अंकित किए। बच्चों का मन अत्यंत कोमल और उर्वर भूमि की भाँति होती है। अब यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम उस पर अच्छे–बुरे कैसे बीजों का वपन करते हैं। हमारे द्वारा रोपित बीज ही आने वाले कल में विशाल वट वृक्ष का रूप लेकर राष्ट्र के भविष्य का इतिहास निर्मित करेंगे।

बच्चे अर्थात राष्ट्र के भावी नागरिक योग्य कुशल, सुसंस्कृतिवान और सुचरित्रवान बनें, इसके लिए उनके समुचित दिशा–निर्देशन की आवश्यकता है। बच्चों के स्वस्थ एवं सबल मानसिक विकास की दिशा में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। साहित्य उपयोगी एवं तार्किक होना चाहिए। इस दृष्टि से साहित्य के सृजन एवं उसके प्रसार के सन्दर्भ में अत्यंत सतर्कता की आवश्यकता है। साहित्य के लेखकों प्रकाशकों, संपादकों समीक्षकों अन्वेषकों के साथ–साथ विशेष रूप से माता–पिता और अभिभावकों के लिए साहित्य की दशा–दिशा का उचित अभिज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

आज साहित्य के समक्ष अनेकानेक ज्वलंत प्रश्न मुँह बाए खड़े हैं। बालक का नैतिक, चारित्रिक, मानसिक, संवेगात्मक विकास स्वस्थ मनोरंजन के साथ कैसे हो ये महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। साहित्य का रूप चाहे जो भी हो सभी का उद्देश्य बालक के सर्वांगीण विकास में सहायता करने से ही है।

यद्यपि मानव मूल्यों के क्षेत्र में शोध और आलोचना के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। समय–समय पर इस क्षेत्र में अनुसंधान कार्य भी होते रहे हैं फिर भी हम पाते हैं कि ऐतिहासिक सामग्री विभिन्न स्रोतों में बिखरी पड़ी है और समीक्षा के क्षेत्र में जो कार्य किये गये वे या तो सतही तौर पर हैं या आधे–अधूरे प्रयास हैं[1] बालकों में मूल्यों की निरन्तर गिरावट नैतिक पतन की स्थिति, या फिर सामाजिक गतिशीलता के रूप में मूल्यों में परिवर्तन इस बात के लिए प्रेरित करता है कि ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा की जाए। वर्तमान परिवेश में मूल्यों का निर्धारण और प्राचीन मूल्यों की वर्तमान शैक्षिक परिवेश में उपादेयता को परखा जाये। बालकों में मानवीय मूल्यों का विकास हो। पाठ्यक्रमीय साहित्य में जो कमियाँ हैं तथा जो सुधार अपेक्षित हैं उनके ही सम्बन्ध में प्रस्तुत अनुसंधान शोधार्थी का एक प्रयास है। प्रस्तुत शोध में समस्या का प्रतिपादन केवल मानव मूल्यों की वर्तमान शैक्षिक परिवेश में प्रासंगिकता को लेकर किया गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि यहाँ अध्ययन शब्द का प्रयोग हिन्दी साहित्य के मौलिक परीक्षण के लिए नहीं किया गया है अपितु मानवमूल्यों के सन्दर्भ में किया गया। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में इन मूल्यों की दशा एवं दिशा क्या है बालकों के लिए यह मूल्य कितने प्रभावी हैं यह परीक्षण करने का प्रयास प्रस्तुत शोध में किया गया है। इतना ही नहीं अध्ययन के लिए आवश्यक मानदण्ड का आधार शैक्षिक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं को बनाया गया है।

1. अध्ययन की आवयकता एवं महत्व – बाल साहित्य सामान्य साहित्य का अंग होते हुए भी उससे सर्वथा भिन्न है। भाषा, शैली, शिल्प, उद्देश्य, संवेदना, भाव, मनोविज्ञान और महत्व इत्यादि अनेकानेक दृष्टियों से दोनो में मूलभूत अन्तर है। सोचने समझने, विचार करने चिन्तन आदि की दृष्टि से बालकों का क्षेत्र बड़ों से भिन्नता लिए रहता है। बालक की अपनी अलग ही दुनिया होती है। वह तो कल्पना के पंखों पर सवार होकर मनोदेश की यात्रा करता है, वह कुछ भी सोच सकता है। उसकी कल्पना की कोई सीमा नहीं लेकिन उसके पास शब्द कोष सीमित है। बालकों के सम्पूर्ण विकास के लिए बाल साहित्य की भूमिका अवर्णनीय है। बालकों की कौतूहल वृत्ति

शान्त करने एवं उनकी जिज्ञासा का समाधान करने में बाल–साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्तित्व–निर्माण एवं विभिन्न क्षमताओं के क्रम में जन्मजात प्राथमिक स्तर पर शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षण साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी स्तर पर बच्चे में सार्थक मूल्यों को स्थापित किया जा सकता है। ज्ञान को सही दिशा में प्रयोग न होना व जीवन के सभी क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों की भारी कमी तथा वर्तमान समय में मूल्यों के संकट के कारण सम्पूर्ण विश्व में मूल्यपरक शिक्षा पर बल देने पर जोर दिया जा रहा है। आज बढ़ते भौतिकवादी विकास की आपाधापी में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है ऐसे में बालक को एक सफल नागरिक के रूप में तैयार करने हेतु बाल साहित्य की आवश्यकता विशेष रूप से बढ़ गई है।

बाल साहित्य के द्वारा मूल्य निर्माण की क्रिया एक सरल कार्य है। प्रेरणाप्रद कहानियाँ, गीत, चित्र आदि बालकों के केवल कौतूहल–वृत्ति को शान्त ही नहीं करते अपितु व्यक्तित्व निर्माण की दिशा भी तय करते हैं। हिन्दी में बाल–साहित्य की समीक्षा तथा विवेचना सम्भवतकृ सर्वप्रथम द्विवेदी जी ने 1952ई0 में की थी। अपनी पुस्तक में उन्होंने बाल तथा किशोर साहित्य पर अनेक दृष्टियों से विचार किया। उन्होंने शिक्षा के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए मनौवैज्ञानिक तथा साहित्य के सिद्धान्तों को प्रमुख मानदण्ड माना। वास्तव में बच्चों के लिए ऐसा साहित्य लिखा जाना चाहिए जिससे उन्हें अपने देश की संस्कृति और परम्परा का ज्ञान हो तथा जिस वातावरण में वह पलते हैं उसके अनुरूप ही विषय हो। बाल–साहित्य के द्वारा मूल्य निर्माण से तात्पर्य है, खेल–खेल में मूल्यपरक शिक्षा बालक को प्रदान करना। मूल्य आधारित शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जो जीवन को मूल्य वान बनाये कीमती बनाये, जीवन जीने के सिद्धातों व रहस्यों से परिचित कराये और ये मूल्य जितने उच्च होंगे उसी स्तर के व्यक्तियों का निर्माण शिक्षा के द्वारा किया जा सकेगा और तथा शिक्षा में विद्या की आवश्यकता पूर्ण हो सकेगी जिसे इस युग के ऋषि पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने प्रतिपादित किया है क्योंकि तब केवल अकेली शिक्षा ही नहीं होगी वरन् उसमें विद्या का भी पूर्ण समावेश हो सकेगा। "जीवन मूल्यों को सिखाने वाली शिक्षा–विद्या के समावेश से ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकेगी।" (पं0 श्रीराम शर्मा 1974ई0)1 बाल साहित्य के द्वारा सहज रूप से बच्चों का मनोरंजन, ज्ञानवर्द्धन, मानसिक एवं वौद्धिक विकास, चरित्र निर्माण, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास, पठन एवं साहित्यक रूचि का विकास, सृजनात्मक अभिरूचि का विकास, संस्कृति एवं इतिहास का संरक्षण तथा जनतांत्रिक एवं विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास किया जा सकता है। बाल साहित्य के नाम पर मूल्य परक शिक्षा न देकर मूल्यों के ह्रास के सन्दर्भ में जो स्थिति बनी है वह यही है कि लेखक केवल रचना के विनोद पूर्व होने की कसोटी देखते हैं स्तर–हीन पत्रिकाओं का बाल साहित्य में आना इसी बात का सचूक है।

बाल साहित्य में मूल्य परक शिक्षा से तात्पर्य यह नहीं है कि बाल मन पर नीति परक दर्शन ही थोप दिया जाये जिससे उनका कल्पना विकास ही रूक जाये। यहाँ पर मर्यादा इतना ही है कि बालक बाल साहित्य से ऊबे नहीं, वह खेल–खेल में जीवन निर्माण की दिशा में आगे बढ़े। अपने व्यक्तित्व को सँवारे। (कोठारी कमीशन 1966) की इस बात पर भली भाँति विचार हो कि भारत का भाग्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है " डॉ0 हरिकृष्ण देवासरे लिखते है कि "बाल साहित्य के साथ इस बात का खतरा सदैव बना रहता है कि उसे सफल कृतियों की उपेक्षा असफल कृतियाँ आच्छादित कर लें।" अक्सर देखा गया है कि पुरानी विचारधारा के लोग नीतिपरक पुस्तकें अधिक पसंद करते हैं और वे बच्चों पर आदर्श और नीतियों का इतना बड़ा बोझ लादना चाहते हैं कि बच्चे उनके नीचे दबकर अपनी मौलिकता, कल्पना शीलता और मुक्त विचारधारा को खो बैठते हैं।[2]

मानव जीवन में मूल्यों का सदैव महत्व रहा है। वर्तमान परिवर्तनकारी समाज में जो उथल–पुथल हो रही

है अन्याय, अत्याचार, हिंसा और आतंकवाद बढ़ रहा है उससे मानवता विखण्डित हुई है, समाज में अशांति और भय का वातावरण बन रहा है, ऐसे समाज में भ्रष्टाचार अन्याय, अनैतिकता धर्मान्धता का वातावरण बन रहा है। समाज का संतुलन बिगड़ रहा है। ऐसे विषाक्त वातावरण को नियंत्रित करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता है।

ऐतिहासिक समीक्षा के दो उद्देश्य हैं पहले रूप में यह वृत्तिमूलक है कि वह समाज को स्वयं की जानने और अपने अतीत तथा अन्य समाजों और संस्कृतियों से अपने सम्बन्ध को समझने की आवश्यकता की पूर्ति करता है। दूसरे उद्देश्य में यह व्यक्ति की जिज्ञासा को शान्त करता है जो प्रायः हर व्यक्ति में पायी जाती है। शोधार्थी ने पाया कि मूल्य निर्माण व उद्देश्यपरक शिक्षा के सन्दर्भ में दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से यदा–कदा विचार प्रकट किये जाते रहे हैं। किन्तु इसके द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो पाई है इस सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है और न कोई साक्ष्य ही उपलब्ध हैं। ज्ञान के पुनर्जागरण काल में जो अभूतपूर्व उन्नति हुई उसमें मूल्यपरक शिक्षा की क्या दशा थी? वर्तमान शैक्षिक परिवेश में मानवीय मूल्यों की पाठ्यक्रम में क्या स्थिति है। यदि काल, परिस्थिति या परिवेश के कारण उनमें परिवर्तन की आवश्यकता है तो वह किस रूप में कितनी होनी चाहिए। कोई व्यवस्था कभी जड़ नहीं हो सकती सामाजिक गतिशलिता के द्वारा इसमें परिवर्तन होता रहता है ऐसे में ऐतिहासिक समीक्षा आवश्यक हो जाती है। शोधार्थी ने पाया कि मूल्यों के वर्तमान शैक्षिक परिवेश के सम्बन्ध में कोई वांछित स्तर के शोध कार्य नहीं किए गए जिससे वर्तमान शिक्षा में उनके प्रभाव को समझना कठिन हो गया है। अतः वर्तमान की समस्याओं का हल खोजने के लिए इतिहास की समीक्षा महत्वपूर्ण हो जाती है। शोधार्थी ने पाया कि इस सन्दर्भ में किसी प्रमुख अलोचक ने समीक्षा का कष्ट साध्य काम हाथ में नहीं लिया। अतः आवश्यक है कि इस क्षेत्र में शोध कार्य किये जाएँ। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने की चेष्टा प्रस्तुत शोध में की गई है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. मानव मूल्यों के ह्यस के कारणों को जानना।
2. मानव मूल्यों और शिक्षा के निहित सम्बन्धों को समझना।
3. वर्तमान शैक्षिक परिवेश में मानव मूल्यों की प्रासंगिकता तय करना।
4. मूल्यपरक शिक्षा के विकास की संभावनाएँ तलाशना।
5. मानव मूल्यों की वर्तमान स्थिति और प्रयासों को समझाना।

अवधारणाएँ :–

1. बच्चों का मन अत्यंत कोमल उर्वर भूमि की तरह होता है हम उस पर अच्छे बुरे जैसे बीजों का वपन करेंगे आने वाले कल में वैसा ही विशाल वट वृक्ष निर्मित होगा।
2. बच्चों के स्वस्थ एवं सबल मानसिक विकास की दिशा में बाल साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है।
3. हिन्दी जन सामान्य की भाषा है हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी में साहित्य की जिन विधाओं को आत्मसात किया जाता है उनका उद्देश्य बालकों में किसी हद तक मूल्य निर्माण करना है।
4. हिन्दी में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए, बाल साहित्य सहजतापूर्ण बालकों का स्वस्थ मनोरंजन, ज्ञानवर्द्धन और चरित्र निर्माण करने में सफल होता है।
5. मानवमूल्य समाज की दिशा निर्धारित करते हैं जिसके द्वारा मानव जाति हमेशा अपनी संस्कृति का पुनर्निर्माण करती है।

6. मूल्य शून्य में पैदा नहीं होता, यह मनुष्य और उसके सामाजिक पर्यावरण के बीच अन्तःक्रिया से उत्पन्न होता है। इसके लिए परिवार की भूमिका को नजरन्दाज नहीं किया जा सकता।
7. मानवीय मूल्य किसी व्यक्ति अथवा समूह के कोई विशेष हित, आकांक्षाएँ अथवा महत्वकांक्षाएँ नहीं होते ये तो सम्पूर्ण समाज और सांस्कृतिक व्यवस्था के वे अंग होते हैं जो सामान्यतः समाज की क्रियाओं को नियंत्रित अथवा निर्धारित करते हैं।

विषयान्तर्गत शब्दों का परिभाषीकरणः–

1. **मानवमूल्य** – मानवमूल्य वे निर्धारक तत्व हैं जिनसे किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का मापन संभव होता है। इसमें व्यवहार से चिंतन तक की स्थिति ज्ञात होती है।
2. **वर्तमान शैक्षिक परिवेश** :– शैक्षिक परिवेश से आशय है उच्च प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 6 से 8 तक) का मूल्यों की दृष्टि से विवेचन।

सीमाकंनः–

1. वेसिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों का मानव मूल्यों की प्रासंगिकता के सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले का एक अध्ययन।
2. मानवमूल्यों – वे मूल्य जो वेसिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश द्वारा विद्यालय शिक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित किये गए है।
3. उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले के कक्षा 6 से 8 तक वे स्कूल जहाँ वेसिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित पाठ्यक्रम पढ़या जाता है।

द्वितीय अध्यायः– संबंधित साहित्य का अध्ययन

1. पुस्तके
2. शोध प्रबन्ध
3. सरकारी गजट
4. पत्र–पत्रिकाएँ
5. संगोष्ठियों का विवरण
6. मूल्यपरक शिक्षा पर शासन द्वारा आयोजित उन्मुखीकरण कोर्स में प्राप्त निष्कर्षों का अध्ययन

तृतीय अध्यायः– शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

शोध प्रविधि सर्वेक्षण

सर्वेक्षण आँकड़ों के संग्रह की एक महत्वपूर्ण विधि है। इसे प्राचीन मिश्र में सबसे पहले प्रस्तुत किया गया। सर्वेक्षण सामाजिक प्रगति के एक रचनात्मक कार्यक्रम को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इसकी परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह प्रत्यक्ष रूप से तथा घुमाफिरा कर आँकड़ों के संग्रह का एक ढंग है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी क्षेत्रीय स्रोत (Field Sources) का प्रयोग करते हुए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार प्रविधि को काम में लेगा। इसके लिए प्रश्नावली बनाकर उसका पूर्व परीक्षण किया जायेगा। पूर्व परीक्षण का उद्देश्य प्रश्नावली की कमियों को दूर करके उसे तथ्य संकलन की दृष्टि से अधिक उपयोगी व त्रुटिहीन बनाना है। प्रस्तुत शोध में साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग किया जाऐगा एवं इस विषय से संबंधित मानकीकृत परीक्षण एवं स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग भी आवश्यकतानुसार किया जाऐगा।

जनसंख्या, न्यादर्श एवं चयन की प्रक्रियाः–

शोधार्थी ने शाहजहाँपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्कूलों की जो आधिकारिक सूची प्राप्त की है उसमें पूर्ण सरकारी विद्यालयों की संख्या 879 है एवं शासकीय सहायता प्राप्त 38 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। इस प्रकार टोटल जनसंख्या 917 है। शोधार्थी बसवेजमत `उचसपदह (गुच्छ निदर्शन) द्वारा न्यादर्श का चयन करता है। इसके लिए पूर्णतः सरकारी एवं शासकीय सहायता प्राप्त ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों की सूची बनाई है। उनमें से यादृच्छिक रूप से कुछ विद्यालयों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

सामाजिक अनुसंधान प्रक्रिया में अनुसंधानकर्त्ता आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए जिन विधियों का प्रयोग करता है उनमें प्रश्नावली का स्थान अन्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें प्रश्नों की एक सूची होती है। अनुसंधानकर्त्ता इस सूची उत्तरदाताओं के पास भेजता है। उत्तरदाता उसे पढ़कर, समझकर एवं उसमें पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भरकर उसे अनुसंधानकर्त्ता को प्रेषित कर देते हैं।

साक्षात्कार विधि के अनेकों गुणों एवं प्रकारों के कारण इसे सामाजिक अनुसंधान में एक विशेष स्थान प्राप्त है। इस विधि के द्वारा उन तथ्यों को एकत्र किया जाता है जो अन्य विधियों–अवलोकन, प्रश्नावली एवं अनुसूची से सामान्यतया संभव नहीं है। यंग ने इस गुण पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि साक्षात्कार पद्धति व्यक्तियों के आन्तरिक जीवन में प्रवेश की संम्भावना के कारण व्यक्तियों की भावना, आन्तरिक विचारों और मनोवृत्तियों का अध्ययन करने के लिए विशेष उपयोगी प्रणाली है।

शोधार्थी ने अपने शोधकार्य के लिए शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग किया है जिससे शोधार्थी परिणाम की वास्तविकता तक पहुँच सके।

अध्याय चार

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :– आँकड़ों का संकलन कर लेने के पश्चात उनके विश्लेषण का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। आँकड़ों एवं तथ्यों के संकलन के पश्चात अनुसंधानकर्त्ता अपना सम्पूर्ण ध्यान उनके विश्लेषण एवं निर्वचन की ओर केन्द्रित करता है। जे.एच.पइनकर ने लिखा है "जिस प्रकार एक मकान का निर्माण पत्थरों से होता है उसी प्रकार विज्ञान का निर्माण भी आँकड़ों से ही होता है, परन्तु जिस प्रकार पत्थरों के ढ़ेर को ही मकान नहीं कहा जा सकता उसी प्रकार केवल तथ्यों के संकलन से ही विज्ञान का निर्माण नहीं हो सकता।"

इस कथन से स्पष्ट होता है कि एक अध्ययनकर्त्ता जब तथ्यों को प्रक्रियाकरण के द्वारा उन्हें व्यवस्थिति क्रम में रखकर उनका विश्लेषण और विवेचन करता है तभी सामाजिक अध्ययन में वैज्ञानिकता का गुण आता है। आँकड़े उस संगत विषय वस्तु के रूप में चाहे उनका संबंध अतीत से हो अथवा वर्तमान से, अध्ययन तथा विश्लेषण के लिए आधार का कार्य करते हैं। आँकड़ों के विश्लेषण के अनेक महत्वपूर्ण चरण हैं, शोधार्थी ने प्रमुख रूप से निम्नलिखित उपयोगी चरणों को काम में लेने का प्रयास किया है।

1. आँकड़ों का सम्पादन
2. आँकड़ों का वर्गीकरण एवं सारणीयन(सांख्यिकीय परीक्षण)
3. आँकड़ों का निर्वचन तथा सामान्यीकरण।

निष्कर्ष, सुझाव एवं संस्तुतियाँ :–

सन्दभिर्त ग्रन्थ सूची

1. आचार्य पं श्रीराम शर्मा (1974) – अखण्ड ज्योति, शिक्षा ही नहीं विद्या की भी आवश्यकता समझी जाये, वर्ष–37, अंक 11, प्रकाशक–अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, पृ–03
2. देवासरे, हरिकृष्ण, हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन 1969 प्रकाशन आत्माराम एण्ड सन्स (दिल्ली)
3. एल.एस. ओ. मैली, पूर्वोद्धत, पृ0–54–66, बी. टी. मैक्कुली, इंगलिश एडुकेशन एंड दि औरिजिंस ऑफ इंडियन नेशनलिज्म, 1966 पुनर्मुद्रण, पृष्ठ–176–237
4. बी. सी. भट्टाचार्य, डेवलपमेंट ऑफ सोशल एंड पोलिटिकल इन बंगाल, 1858–1885, अप्रकाशित पी–एच.डी शोध प्रबन्ध, लंदन विश्वविद्यालय, 1934, पृष्ठ–13
5. आर. सी. मजूमदार (स.) पूर्वोद्धित, पृ0–89
6. ट्रेवेलियन दिः एजुकेशन ऑफ दि पीपुल ऑफ इण्डिया, पृ0–168
7. थामसन एण्ड गैरटः राइज एण्ड फुलफिलमेंट आफ ब्रिटिश रूल इन इण्डिया, 1935
8. नसरूल्ला एण्ड नायक : हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया, पृ0–92
9. देसाई, ए0 आर0 : पूर्वोक्त, पृ0–112
10. देसाई, ए0 आर0 : पूर्वोक्त, पृ0–116
11. लास्कीः दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म, पृ0–18
12. दिनकरः पूर्वोक्त, पृ0–1–3
13. देसाई, ए0 आर0 : पूर्वोक्त, पृ0–210
14. सोफिया डानसन कालेट, लाइफ एंड लेटर्स ऑफ राममाहेन राय, 1913, पृ0 124, महादेव गोविन्द रानाडे, दिमिसलेनिअस राइटिंग्स, 1915, पृ0–190–95
15. राममोहन राय, तुहफातउल–मुहवद्दीनः जे.सी. घोष (सं0), दि इंगलिश वर्क्स ऑफ राजा राममोहन राय, 1906, पृ0–945–46
16. वही. पृ0–929 एम0 जी0 रानाडे, पूर्वोद्धत, पृ0–236–37
17. के. सी. सेन., प्रोमोशन ऑफ एजूकेशन इन इंडिया; पी. एस. बसु (सं0), पूर्वोद्धत, पृ.48
18. एम. जी. रानाडे पूर्वोद्धत, पृ0–166
19. वही
20. राममोहन राय, माडर्न इनक्रेचमेंटस आन दि एंशिएंट राइट्स ऑफ फीमेल्स; नाग और वर्मन, इंगलिश वर्क्स ऑफ राममोहन राय, 1945, 1, पृ0 9 केशव चन्द्र सेन, मैन ऑफ कांसीक्वेंस; पी. एस. बसु(सं0), पूर्वोद्धत, पृ. 217
21. डेविड कॉम्फ, ब्रिटिश ओरियंटलिज्म एंड इंडियन रिनेसां, 1969, पृ.13–21

22. लार्ड मैकाले की मार्च 1835 की रिपोर्ट पर आधारित
23. तारीखे तालीम : सैयद महमूद पृ0 7–12
24. तारीखे तालीम : सैयद महमूद पृ0 13–17
25. रोशन मुस्तकबिलः तुफैल अहमद मंगलौरी पृ0–144
26. इंडियन एजूकेशनः शार्प पृ0–19
27. असबावे बगावते हिन्द : सर सैयद अहमद खॉं पृ0–44
28. असबावे बगावते हिन्द : सर सैयद अहमद खॉं, पृ0–44
29. रोशन मुस्तकबिलः तुफैल अहमद मंगलौरी पृ0–147
30. तारीखे तालीम : सैयद महमूद पृ0–104
31. हीमस्थ, चार्ल्स0 एच0 : इडियन नेशनलिज्म एंड हिन्दू सोशियल रिफार्म, पृ–9–10
32. देसाई, ए. आर. सोशियल वैंकग्राउण्ड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म, पृ0–191
33. दि फादर ऑफ मार्डन इंडिया स्मारक ग्रन्थ, भाग–2
34. पूर्वोद्धत भाग–2
35. देसाई, ए. आर. पूर्वोद्धत, पृ0–220
36. मार्डन रिव्यू : सितम्बर, 1928, पृ0–338
37. चन्द्र, तारा,: भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, भाग–2, पृ0–232